संक्षिप्तिका

भारत एक प्राचीनतम् राष्ट्र है। मानव जाति के इतिहास ने जब आँखे खोली तो उसने भारत को एक सुसंस्कृत, सबल, समृद्ध राष्ट्र के रूप में देखा। मानव जाति ने बीते समय में शांति, समन्वय, सौहार्द और एकात्मता का संदेश यहीं से प्राप्त किया।

अपने श्रेष्ठतम तत्त्वज्ञान और उस तत्त्वज्ञान के प्रकाश में विकसित हुई संस्कृति के कारण भारत विश्व गुरु की भूमिका निभाने में सक्षम रहा है।

जीवन का सार तत्त्व धर्म है। धर्म से ही जीवों की वास्तविक पहचान होती है। इसलिए धर्म का स्थान सर्वोपरि है और किसी भी सत्ता का स्थान उससे ऊपर नहीं है। हर हालत में धर्म की रक्षा करनी है। अगर किसी का धर्म चला गया तो उसका सब कुछ चला गया।

आज आवश्यकता इस बात की है कि वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, दर्शन तथा विभिन्न संतों द्वारा रचित ग्रन्थ सम्पदा में संचित हमारी संस्कृति, परम्परा तथा तत्त्वज्ञान से आज की पीढ़ी परिचित हो। हमारे देश की अनादिकाल से वर्तमान तक की दर्शनात्मक, सांस्कृतिक, सामाजिक व ऐतिहासिक यात्रा, राजा रूद्र प्रताप द्वारा रचित 'रामखण्ड रामायण महाकाव्य' में संचित है। सम्पूर्ण विश्व को एकात्मता के सूत्र में जोड़ने में सक्षम तत्त्वज्ञान की विकास यात्रा को हम इस महाकाव्य में देखते हैं। व्यक्ति, परिवार, समाज और विश्व में समन्वय हेतु दृष्टि, व्यवहार के नियम तथा उन नियमों के अनुसार जीवन जीने वाले श्रेष्ठतम व्यक्तियों की जीवन गाथा इस महाकाव्य में संगृहीत है। कवि रूद्र प्रताप सिंह ने 'रामखण्ड रामायण' के माध्यम से हमारी प्राचीन ज्ञान सम्पदा को वर्तमान पीढ़ी के सामने रखने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

'रामखण्ड रामायण' की अर्थ विविधता समुद्र की अटल गहराई का अवगाहन कराने वाली है। 'रामखण्ड रामायण' अर्थ की गहनता, गम्भीरता और विवधता आज भी विद्वानों के चिन्तन का विषय है। कवि का व्यक्तित्व विरल नहीं विराट था। उनकी अन्तःदृष्टि व्यापक और सार्वभौमिक थी, किन्तु उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी महानता विनम्रता की चरम परिणति है।

कवि रुद्र प्रताप ज्ञान के निधान, गुणज्ञ काव्यशास्त्र के निष्णात् पण्डित तथा महाकाव्य के विधायक होते हुए भी अपने को विनम्रतापूर्वक अल्पज्ञ घोषित करने में उन्हें किंचित मात्र संकोच नहीं है।

'रामखण्ड रामायण' एक ऐसा सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है जिसका कथानक पौराणिक, जनाकर्षक है। महाकाव्य के नायक पुराण पुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। कवि के राम ब्रह्म के अवतार हैं। वह ही सम्पूर्ण कथानक के केन्द्र बिन्दु हैं।

कवि रूद्र प्रताप लोक ख्याति के उपासक नहीं थे वह तो मात्र धर्म के ही साधक थे और उनका धर्म वैष्णव धर्म है। वैष्णव धर्म के प्रतिपादन के लिए कवि के पास एक ठोस आधार भी है–वह है राम–कथा। चूँकि कवि रामकथा का गुणगान करने में स्वयं प्रवृत्त है और राम वैष्णव धर्म के पूज्य स्वामी हैं इसीलिए उसे धर्म–प्रतिपादन में अत्यधिक सुविधा सुलभ हो जाती है और इसी साधना के कारण उन्हें परम विश्राम (सुख) की प्राप्ति हुई।

इस प्रकार हम देखते हैं जिस वैष्णव धर्म और उसकी साधना का प्रतिपादन रामखण्ड रामायण में हुआ वह तर्कसम्मत है।

एक रचनाकार के रूप में वे स्वयं में एक संस्था थे। प्रतिपाद्य संदर्भ में हमारा सरोकार रामखण्ड रामायण में धर्म और साधना से है। अवधी में लिखित 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण' धर्म और साधना के क्षेत्र में एक प्रामाणिक साक्ष्य है जिससे धर्म और साधना के क्षेत्र को बल मिलता है। इस महाकाव्य में

अनेक ऐसी धार्मिक कथाओं का उल्लेख है जो अन्य महाकाव्यों, पुराणों में नहीं मिलती हैं। अतः 'सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य' के धर्म और साधना के स्वरूप के अध्ययन से निश्चित रूप से कई नए तथ्य सामने आयेंगे।

'रामखण्ड रामायण' पर मेरा शोध–कार्य करने का सबसे बड़ा कारण वैष्णव धर्म और उसकी साधना का प्रतिपादन है। मुझे लगा कि 'रामखण्ड रामायण' में धर्म प्रतिपादन और उसके साधना के स्वरूप को सुधी विद्वानों के समक्ष लाने का प्रयास व्यर्थ नहीं होगा।

इस अनुक्रम में हमने अपने विषय–निरूपण की योजना को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है। जिसका सार क्रमागत बिन्दुओं के माध्यम से प्रस्तुत है।

इन विविध अध्यायों में धर्म और साधना के स्वरूप का अध्ययन किया गया है। विषय की रूपरेखा के अनुसार विभिन्न उपशीर्षकों के अन्तर्गत विषय का निरूपण किया गया है। अन्त में उपसंहार में निष्कर्ष ग्रहण किया गया है।

प्रथम अध्याय शोध विषय का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है। इसके दो खण्ड किए गए हैं– (क) धर्म और साधना का स्वरूप तथा (ख) सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय।

धर्म और साधना का स्वरूप वाले खण्ड में सर्वप्रथम धर्म की परिभाषा स्पष्ट की गयी है। फिर साधना का स्वरूप समझाया गया है, जिसके अन्तर्गत निम्न बिन्दुओं को स्पर्श किया गया है–

ब्रह्म के तात्त्विक स्वरूप का अवलोकन के विवेचन के अन्तर्गत कहा गया है कि ब्रह्म के तात्त्विक स्वरूप को प्राप्त साधक एक शिशु की तरह निर्मल मन हो जाता है। ब्रह्म के अतिरिक्त किसी की सत्ता नहीं। ब्रह्म ही सर्वशक्तिमान है। योग समन्वय के संबंध में बताया गया है कि आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध, जीव और शिव के समन्वय का सिद्धान्त ही योग कहलाता है। परम्परा और

मौलिकता : दर्शन एवं भक्ति की दृष्टि से तथा पौराणिक परम्परा एवं महत्व को पुराण, इतिहास, भौगोलिक एवं खगोलीय दृष्टि से विवेचित किया गया है।

खण्ड (ख) में सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड अवधी महाकाव्य का संक्षिप्त परिचय के अन्तर्गत विशालकाय महाकाव्य–भारतीय साहित्यशास्त्र के अनुसार सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड विशाल महाकाव्य है। आकार की दृष्टि से तो यह एक विशाल महाकाव्य है ही–कथा रस प्रवाह की दृष्टि से और प्रमुख चरित्र के व्यापक चित्रण की दृष्टि से भी इस महाकाव्य की विशालता असंदिग्ध बतायी गयी है। भारतेन्दु मण्डल के प्रमुख कवि एवं साहित्यकार पं0 सुधाकर द्विवेदी द्वारा सम्पादन और प्रकाशन 1911 में किया गया। विश्व प्रसिद्ध रामकथा पर आधारित काव्य का नौ अध्यायों में विभाजन, कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से विलक्षण, प्रासंगिक एवं युगानुकूल कथा, एक हजार वर्षों का दस्तावेज इत्यादि का विवेचन इसी अध्याय में किया गया है।

द्वितीय अध्याय के अन्तर्गत कवि रूद्र प्रताप सिंह का जीवन परिचय प्रस्तुत किया गया है। कवि के पूर्वजों का उल्लेख किया गया है तथा कवि की माता रत्ना अपने पुत्र के पालन के लिए किस प्रकार जीती रहीं, अपने पति के साथ सती नहीं हुई, यह भी बताया गया है। वंश परिचय में वह अपने वंश के एक–एक व्यक्ति का उल्लेख करता है। राज्यकाल का समय राजनीतिक एवं सामाजिक दृष्टि से उथल–पुथल का समय बताया गया है। रामखण्ड रामायण में अपने राज्य–काल को कवि ने राम कथा के प्रसंगों के समानान्तर रखने का भरपूर प्रयत्न किया और उसे काव्य में स्थान दिया गया है। रचना काल को राजनैतिक दृष्टि से उथल–पुथल का समय बताया गया है। जगह–जगह युग–बोध और युग पीड़ा के चित्र भी उपस्थित किये गये हैं। ग्रन्थ प्रकाशन का समय सन् 1901 से 1911 के मध्य बताया गया। ग्रन्थ के सम्पादक पं0 सुधाकर द्विवेदी को ज्योतिष, हिन्दी, संस्कृत, का प्रकाण्ड विद्वान कहा गया है। काव्य के

माध्यम से धर्म और साधना का उपदेश दिया गया है कि धर्म के पालन से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा विश्वहित साधन में बड़ी सहायता प्राप्त हो सकती है।

तृतीय अध्याय में रामखण्ड रामायण में वर्णित धर्म का स्वरूप विवेचित किया गया है जिसके अन्तर्गत कवि रूद्र प्रताप ने अपने काव्य में धर्म के दो अंग भक्ति एवं ज्ञान का निरूपण करने का प्रयास अनेक बार किया है। वैष्णव धर्म का प्रतिपादन रामखण्ड रामायण में हुआ है। इस प्रकार हम देखते हैं कि धारणात्मक इस धर्मतत्त्व के स्वरूप का साधु निरूपण सुसिद्धान्तोत्तम रामखण्ड रामायण में किया गया है। पौराणिक और अवतार कथाएँ के अन्तर्गत पौराणिक आख्यानों तथा पूर्व रामकथाओं को आदर के साथ प्रस्तुत किया गया है। अवतार कथाओं के माध्यम से वैष्णव धर्म–चिन्तन बड़े विश्वास के साथ प्रस्तुत किया गया है। निर्गुण तथा सगुण विचार के अन्तर्गत कहा गया है कि विश्व की परमसत्ता ब्रह्म शुद्ध चैतन्य स्वरूप है। वह निर्गुण–निराकार है तथा सर्वव्यापक है। वह सृष्टि के कण–कण मे व्याप्त है। परम सूक्ष्म चैतन्य सत्ता तत्त्वतः निर्गुण होकर भी दृश्यमान स्थूल जगत् के रूप में सगुण–साकार है।

ब्रह्म, जीव, जगत, माया और मोक्ष का स्वरूप के अन्तर्गत ब्रह्म की व्याख्या करते हुए बताया गया है कि ब्रह्म का स्वरूप विज्ञानमय और आनन्दमय है, उसको विवेक के द्वारा जाना जा सकता है। यह भी कहा गया है कि भगवद्गीता के कृष्ण और मानस के राम दोनों ब्रह्म हैं। राम के ब्रह्म स्वरूप की बात अनेक स्थानों पर कही गयी हैं। राम अद्वैत, परमब्रह्म परमात्मा हैं।

जीव की व्याख्या करते हुए कहा गया कि जीव का अस्तित्व पिण्डधारियों में होता है। 'सूक्ष्म और कारण' शरीर के माध्यम से जीव का प्रकाशन होता है। प्राण और जीव समान धर्मा है। जगत को ब्रह्म का ही दूसरा रूप माना गया है। ब्रह्म ही उसका पिता है, वही पालक है और वही संहारकर्ता। ब्रह्म अनन्त है और जगत् उसका एक अंश है। कवि कहता है कि वह यह संसार माया का विकार

है– जो इन्द्रजाल सा लगता है। माया सबको ठगती है।

मोक्ष की व्याख्या में कहा गया है कि मोक्ष ही मानव जीवन का परम पुरुषार्थ है। यह यथार्थ साध्य है तथा पूर्णतः सिद्ध है। कवि कहता है कि भक्ति और मुक्ति (मोक्ष) के कारण श्री रघुनंदन ही हैं–

HkfDr&eqfDr dkju j?kqunuA ftfe lkjHk dkju ny pnuAA

इस अध्याय के अन्त में विभिन्न दार्शनिक विचारों का उललेख किया गया है। जिनमें छः आस्तिक तथा तीन नास्तिक दर्शनों का विवेचन किया है। कवि ने महाकाव्य में प्राचीन भारतीय ग्रन्थों और दर्शनों का आधार लिया है।

'चार्वाक दर्शन' की व्याख्या करते हुए कवि कहता है–

cn&fcfufnd cpu lqfu pkjckd&er tkfuA
:nirki l:"V gkb cky lkjx&ikfuAA

^बौद्ध दर्शन' के अन्तर्गत महात्मा बुद्ध के चार आर्य सत्यों को ही बौद्ध दर्शन की आधारशिला बताया गया है। बौद्ध दर्शन में अहिंसा पर बहुत जोर दिया जाता है। बौद्ध की संस्कृति भारतीय संस्कृति ही है और बौद्ध दर्शन भी भारतीय दर्शन है। प्राचीन परम्परा के अनुसार बौद्धों के मुख्य सिद्धान्तों के आधार पर तत्त्वदृष्टि से दार्शनिक विचारधारा के क्रमिक विकास को ध्यान में रखकर आध्यात्मिक विचारों का ही कवि ने वर्णन किया है।

'जैन दर्शन' में अहिंसा को परम धर्म माना गया है। अहिंसा को धर्म मानने वाले तो सभी भारतीय दार्शनिक हैं परन्तु अहिंसा को ही परम धर्म, मानव का सच्चा धर्म, मानव का सच्चा कर्म मानने वाले केवल जैन लोग हैं। तात्पर्य यह है कि किसी भी प्रकार की हिंसा को जैन धर्म में पाप माना गया है।

'सांख्य दर्शन' का वर्णन करते हुए कहा गया है कि–

''dfiy lk[;fcn ekrfg xkbA lkb fcnqer gefg

l|ukbAA**

उज्जैन नरेश राजा बिक्रमाजीत (विक्रमादित्य) के चरित वर्णन करते हुए कवि ने कहा है कि यह राजा सांख्य, न्याय और धर्म का ज्ञाता था–

^^/kuijkl|j l|fr cnu lk vPNkA lk[; U;k; v# /ke! i|rPNkAA**

कवि वैष्णव धर्म का अनुयायी है, उसके सांख्य दर्शन निरूपण में भी इसकी छाया देखी जा सकती है।

'योग दर्शन' में ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित किया गया है। यह भी कहा गया है कि मनुष्यों के स्वभाव, गुण, अधिकार, भिन्न–भिन्न हैं, इस कारण योग मार्ग भी भिन्न–भिन्न है, पर गंतव्य स्थान एक ही है।

'न्यायदर्शन' को तर्कवादी दर्शन कहा गया है। न्यादर्शन की समृद्धि में गुप्त युग का बड़ा योगदान बताया गया है। 'वैशेषिक दर्शन' को अत्यंत प्राचीन बताया गया है। 'मीमांसा दर्शन' का विषय बताया गया है– वैदिक विधि निषेधों का आशय समझाना, उनकी पारस्परिक संगति बैठाना और युक्तियों के द्वारा कर्मकाण्ड के मूल सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना। 'वेदान्त दर्शन' के निरूपण पर वैष्णव भक्ति का प्रभाव अधिक है। कवि कहता है कि भक्त को योगियों की तरह अपना अन्तःकरण साफ रखना चाहिए, तभी वह मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करता है।

इस प्रकार इस अध्याय में कवि द्वारा सर्वत्र अपने ज्ञान का उपयोग किया गया है, विशेषकर जहाँ वह आध्यात्म की बातें करने लगता है उसका विचार और चिन्तन, दर्शन बहुत उत्कृष्ट रूप प्राप्त कर लेता है।

चतुर्थ अध्याय के अन्तर्गत रामखण्ड में वर्णित साधना का स्वरूप विवेचित किया गया है। साधना का अर्थ सिद्धि कहा गया है। गुरु निष्ठा के अन्तर्गत कवि द्वारा अपने गुरु रूद्रमणि की प्रशंसा विस्तार से की गयी है। गुरु को पथ प्रदर्शक

कहा गया है। नाम साधना के अन्तर्गत भक्ति के क्षेत्र नाम जप को प्राथमिकता दी गयी है। योग साधना को ईश्वर की प्राप्ति का साधन माना गया है। यह भी कहा गया है कि आत्मा और परमात्मा में मिलन के तीन मार्ग बताये गये हैं–कर्म, भक्ति, ज्ञान। कर्म साधना के अन्तर्गत रामखण्ड रामायण में जो सबसे बड़ा नैतिक आदर्श प्रस्तुत किया गया है वह है निष्काम कर्म योग की पर्याय राम भक्ति का। यह सार्वभैमिक नैतिक आदर्श कहा गया है। ज्ञान साधना को ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित करने का आध्यात्मिक मार्ग बनाया गया है। भक्ति–साधना के अन्तर्गत कहा गया है कि भक्ति–साधना सार्वजनीन है। राम–तत्त्व को समस्त सांसारिक समस्याओं का समाधान कहा गया है।

पंचम अध्याय में विभिन्न प्रकार की साधना पद्धतियों, कर्मकाण्डों और ज्योतिष आदि का उल्लेख किया गया है। इसके अन्तर्गत बताया गया है कि साधना भारत की आध्यात्मिक सम्पत्ति है। चरम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए यह सोपान अवश्य अवलम्बनीय है। मानव जीवन को सफल बनाने के लिए सभी शास्त्रों में चतुष्पुरुषार्थ साधना को ही महत्व दिया गया है। भारतीय ज्योतिष भी धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का ही संदेश देता है। सत्य नारायण व्रत कथा वर्णन में कहा गया है कि सत्य धर्म के प्रतिष्ठा हेतु भगवान नारायण ने सत्यनारायण का अवतार धारण किया और सत्य की महिमा स्थापित की।

हनुमान मंत्र प्रयोग वर्णन में विवेचना की गयी है कि हनुमान रामकथा के प्राणतत्व हैं। यह भी बताया गया है कि शिव के अंशावतार हनुमान असम्भव को भी संभव बनाने की अद्‌भुत शक्ति के संवाहक हैं। हनुमान जी को अष्ट सिद्धि नव निधि के दाता, महाबली, महान सेवक के रूप में स्मरण किया गया है। हनुमान मंत्र की रचना कवि ने मंत्र सिद्धि और दुखमोचन के लिए की है।

जानकी मंत्र प्रयोग वर्णन में कहा गया है कि जानकी तीनों लोकों की जननी है, दुर्बुद्धि का नाश करने वाली है, जो विदेह राजा जनक की यज्ञ पुत्री हैं

और अहंकारियों के अहंकार को चूर करने वाली हैं और सद्भक्तों का भरण पोषण करने वाली हैं–

^^txr lfDr nk;d fefFky:lkA gkb! Lokgk gfj vej dy:'kkAA
Lo/kke;h firjUg l|[knkuhA lkfr dkfr lrfLV HkokuhAA**

यह भी कहा गया है कि सीता का पूरा चरित्र वंदनीय है। उनका चरित्र अनन्त काल तक सबके लिए आदर्श बना रहेगा।

मानसिक पूजा वर्णन करते हुए कवि कहता है कि साधक को अपनी रुचि, भावना और अधिकार के अनुसार तथा अभ्यास की सुगमता देखकर किसी भी एक स्वरूप का ध्यान करना चाहिए। संध्या समय का कर्म की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति श्रद्धा–भक्ति से प्रतिदिन जीवनपर्यन्त यथाधिकार संध्याकर्म देवपूजन आदि नित्य कर्म करता है, उसकी बुद्धि आत्मनिष्ठ हो जाती है। इसलिए मानव जन्म को सफल करने के लिए मानव मात्र को संध्यासमय का कर्म नियमित रूप से करने चाहिए।

अतिथि पूजन निधि का वर्णन करते हुए कहा गया है कि गृहस्थ का कर्तव्य है कि अपनी शक्ति के अनुसार अतिथियों का आसन, भोजन, आदि से सत्कार करें। भोजन विधि के अन्तर्गत कहा गया है कि द्विज को सायं–प्रातः भोजन करना चाहिए। बीच में नहीं करना चाहिए। यह भी कहा गया है कि सदैव श्रद्धा से अन्न–भोजन ग्रहण करना चाहिए। शयन विधि के वर्णन में कहा गया है कि रात्रि में शयन हरि का स्मरण अवश्य करना चाहिए। गुरु, माता, पिता, अन्न, गाय, ब्राह्मण के शयन पूर्व स्थान पर बैठने का निषेध बताया गया है। वैश्यों और शूद्रों धर्म के बारे में कहा गया है कि वैश्य व्यापार, ब्याज (सूद) की जीविका, खेती तथा पशुपालन करे। शूद्रों से दास कर्म कराने का भी विधान कवि ने बताया है।

गंगा का माहात्म्य के बारे में कहा गया है कि गंगा में स्नान करने से सभी

जन्मों के पाप हर जाते हैं–

xx&rjx vux eukgjA ldy no&lfcr fr; ldjAA
lk lenipRuh cj n[kkA lrtUek v?k feVfg fcl[kkAA**

गंगा को लोकमाता और विश्व पावनी कहा गया है। गंगा का आश्रय लेकर मानव भौतिक उन्नति ही नहीं अपितु मानवता को उपकृत करने के लिए आध्यात्मिक उन्नति भी कर सकता है। गंगा को भारतीय संस्कृति और संस्कारों की आचार संहिता का प्रतीक कहा गया है। आज जब गंगा के प्रदूषण को समाप्त करने के लिए इतने आन्दोलन चलाए जा रहे हैं तब कवि रुद्रप्रताप के इस गंगा माहात्म्य की महत्ता और बढ़ जाती है।

विभिन्न माह व्रत निर्णय के अन्तर्गत कहा गया है कि विभिन्न महीनों में स्नान, दान, पूजन आदि कर्म नियत समय पर किये जाने पर पूर्णरूपेण फलप्रद होते हैं। समय के बिना की गयी क्रियाओं का फल तीनों कालों तथा लोकों में भी प्राप्त नहीं होता। मलमास वर्णन करते हुए कहा गया है कि इस माह में दान–पुण्य का बहुत महत्व है। इस माह में तीर्थ स्नान, देव दर्शन, व्रत उपवास आदि किया जा सकता है। रसायन वर्णन करते हुए कहा गया है कि स्वास्थ्य रक्षा में रसायन का बहुत महत्व है। रसायनशास्त्र के अन्तर्गत अवस्था, आयुष्य, मेधा और बल को बढ़ाने वाले पौष्टिक रसायनों का वर्णन किया है। रस वर्णन इस प्रकार किया गया है कि रोग चाहे छोटा हो या बड़ा। हल्का हो या गम्भीर सबके लक्षण कवि पहचानता है। रोगों, उससे सम्बन्धित औषधियों और उनके प्रभाव प्रत्येक बिन्दु पर प्रकाश डाला गया है। रस भूयसी वर्णन की सबसे बड़ी विशेषता यह हे कि कहीं तो व्याख्यात्मक शैली में वर्णन किया गया है, और कहीं अपनी बातें संक्षेप में की गयी हैं। यह भी कहा गया है कि जो व्यक्ति सदैव हितकर आहार–विहार का सेवन करता है, वह निरोग होता है।

अन्त में उपसंहार के अन्तर्गत रामखण्ड रामायण में वर्णिन धर्म और साधना के स्वरूप का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। भारतीय धर्म की अवधारणा लोकमंगल है। कवि धर्म का सच्चा साधक है। उन्होंने निरन्तर सारस्वत साधना के द्वारा धर्मतत्त्व का हृदय में साक्षात्कार किया है। कवि सतत् साधना के द्वारा धर्मस्वरूप राम की आराधना करने में सफल हुआ है। रामखण्ड रामायण की उपादेयता यही है कि इसके पाठ, चिन्तन, अनुपालन करने से राम का हम सभी को अनुग्रह प्राप्त हो जाता है। वस्तुतः यह महाकाव्य एक ऐसा ग्रन्थ रत्न है जो जनमानस के कुसंस्कारों को परिमार्जित और सुसंस्कारित करने में आज भी सफल एवं सक्षम है।

हमारे भारतीय वाङ्मय में धर्म के सच्चे स्वरूप पर विचार हुआ है। इस विचार की साधना कवि रूद्र प्रताप ने राम को आराध्य बनाकर की है। धर्म से अनुप्राणित और ईश्वरीय चेतना से अभिभूत ऐसी रचनाएँ समाज के लिए प्रेरक होती हैं। इससे समाज में समता और सहयोग की स्थापना होती है। धर्म हमेशा समाज के निर्माण ओर विकास में सहायक रहा है।

अतः रामखण्ड रामायण में धर्म और साधना के बताये निर्देशों के अनुसार मूल्यों और मर्यादाओं के आधार पर आचरण पर बल दिया जाए। जिस समाज में मूल्यों और मर्यादाओं का वर्चस्व होता है, वहाँ अधर्म अपने पैर नहीं पसार पाता। आज हमारे समाज की यही सबसे बड़ी समस्या है कि मूल्यों का लगातार पतन होता जा रहा है। पूरे समाज का यह दायित्व है कि इस स्थिति में परिवर्तन लाया जाये ताकि एक सुशिक्षित–सुसंस्कृत समाज का लक्ष्य हासिल किया जा सके।

धर्म और साधना के माध्यम से हम अपने व्यक्तित्व को विकसित करते हैं। इस शोध कार्य का सर्वोत्कृष्ट उद्देश्य यही है कि मानव मात्र सार्वभौम कल्याणकारी धर्म की अवधारणा से अवगत होकर मानवीय मूल्यों को समझकर

मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाये, जिससे समग्र विश्व का कल्याण हो सके।

वर्तमान समय में यह शोध कार्य निःसन्देह जनमानस को नवीन मार्ग प्रशस्त करेगा तथा कटुता व वैमनस्य को दूर करने और शुद्ध सात्विक वैचारिका का उद्‌भव करने में सक्षम होगा। रामखण्ड–रामायण में मनुष्य के समस्त समस्याओं का समुचित समाधान प्राप्त होता है। यह एक समन्वयवादी महाकाव्य है, जिसमें कवि ने जीवन के सर्वांग दर्शन की व्याख्या की है। शताब्दियों से समन्वयवादी दृष्टि भारतीय जीवन शैली की आधार–शिला रही है।

आज लोकतंत्र भ्रष्टतंत्र का पर्याय बनकर रह गया है। निश्चित ही राष्ट्र–रथ पतन के दल दल में तीव्रगति से धँसता चला जा रहा है। ऐसी संक्रान्ति बेला में यह शोध–कार्य जनमानस को कर्तव्यपरायणता तथा कार्य संस्कृति की सामयिक दृष्टि देकर दिशा–निर्देशन एवं पथ–प्रदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करने में पूर्ण सफल होगा। इस दृष्टि से धर्म और साधना के स्वरूप की अवधारणा मानव जाति, समाज एवं राष्ट्र के लिए सर्वथा उपादेय है।